बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – पंचम्   दिनांक -16 - 01-2021

विषय -हिन्दी   विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज व्यंजन संधि के बारे में अध्ययन करेंगे।

व्यंजन संधि

व्यंजन संधि

जब किसी व्यंजन के साथ किसी स्वर या व्यंजन का मेल हो, तो वह व्यंजन संधि कहलाती है।

व्यंजन संधि के प्रमुख नियम इस प्रकार हैं

नियम 1:

यदि किसी वर्ग के प्रथम या तृतीय वर्ण से परे अनुनासिक वर्ण रहे, तो वह निज वर्ण का अनुनासिक होकर अगले वर्ण से मिल जाता है; जैसे

जगत् + नाथ = जगन्नाथ, उत् + मत्त = उन्मत्त।

नियम 2:

क, च, ट, त, प से परे किसी भी वर्ग का तीसरा या चौथा व्यंजन

अथवा स्वर आए, तो क, चे, ट, त, प का क्रमशः गे, ज, ड, द, ब हो जाता है; जैसे- सत् + आचार = सदाचार

जगत् + ईश = जगदीश

दिक् + गज = दिग्गज

अच् + अन्त = अजन्त

षट् + दर्शन = षड्दर्शन

वाक् + जाल = वाग्जाल

षट् + आनन = षडानन्

नियम 3:

त्, द् या न् के आगे ल रहने से इसका भी ल् हो जाता है, परन्तु 'न' के लिए चन्द्रबिन्दु भी लगता है; जैसे- उत्+ लास = उल्लास। महान् + लाभ = महाल्लाभ। तत् + लीन = तल्लीन।

नियम 4:

'त्' या 'द्' के आगे 'च', 'छ' रहने से 'त्' को 'च' हो जाती है; जैसे- उत् + चारण = उच्चारण। उत् + छिन्न = उच्छिन्न।।